श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ६

नवम्बर २०२३

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. आचार्यादि गुरु भगवान के आसन ग्रहण करने के पश्चात ही उनके सामने..... बैठना चाहिये।
२. कर्म का बंध-मोक्ष..... ऐसी आत्मा को है ही नहीं।
३. यह तो पका फल है ऐसा विचार करक पक्की केरी चूसे तो ..... अतिचार लगता है।
४. आयुष्य कर्म घट सकता है परंतु..... तो होती ही नहीं।
५. रुक्मि और महाहिमवंत दोनों..... पर्वत हैं।
६. साधुओं के संघ द्वारा वंदन किये गये ऐसे..... को मैं प्रणाम करता हूं।
७. मैं प्रति दिन..... तप करुंगा।
८. तीन भेद..... नामकर्म के हैं।
९. अंतर के ..... से विधि पूर्वक वंदन करना भाववंदन हैं।
१०. श्रावक जो निरवद्य आहार न ले सके तो भी ..... तो अवश्य बनना चाहिये।
११. ..... हर समय न बँध कर भव में एक बार ही बँधता है।
१२. गुरु को वंदन करने से प्राणी..... कर्म ग्रंथि का भेदन करते हुए शिथिल बंधनरुप कर देता है।
१३. ..... आत्मा सर्व व्यापक है।
१४. खाने के पदार्थो की संख्या, स्नान की संख्या आदि.....में आते है।
१५. सिद्धायतन..... पर है।
१६. ..... में दुख है फिरभी वहाँ जीने की इच्छा है।
१७. गुरु से पहले..... की आलोचना लें तो आशातना समझना।
१८. मानसिक विकार और क्रूरता ..... जीव धर्म करने की पात्रता व योग्यता खो बैठते हैं।
१९. मौर्यपुत्र..... नामक संस्थान के धारक थे।
२०. अपने जीवन बाग को सुंदर बनाने के लिये ..... में विवेक लायें।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. आत्मा ज्ञान से कैसा है ?
२. जिन दर्शन एवं पूजा के कर्तव्य को पूर्ण कर श्रावक क्या करने जाता है ?
३. आयुष्य जितना है उतना भोगा जाये वह कौन सा आयुष्य कहलाता है ?
४. किन पर्वतों में प्रत्येक में चार चार शिखर हैं।
५. तपस्या से, तत्काल उदित शरद् ऋतु के सूर्य से अधिक कांति किसकी है ?
६. अनाभोग से छूट रखी हुई हद से ज्यादा सचित्त लेने में आये तो कौनसा अतिचार लगता है ?
७. "त्रस-चतुष्क" इन दो शब्दों में प्रथम शब्द क्या सूचित करता है ?
८. कौनसी रत्न कुक्षी माता के दोनों पुत्र गणधर थे ?
९. मानवी अपने जीवन को किससे मलिन बनाते हैं ?
१०. वैताढ्य के शिखर कैसे हैं ?
११. कृष्ण महाराजा को वंदन से किसकी प्राप्ति हुई ?
१२. अतिशय दुःख होने से कहाँ से छुटने के भाव जीव को होते हैं ?
१३. वीर प्रभु के छठवें गणधर का गोत्र क्या था ?
१४. महामुनि शांतिनाथ भगवान किसे फैलाने वाले हैं ?
१५. चार दिशा और विदिशा में जाने का प्रमाण किसमें किया जाता हैं ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. उवणमे २) छक्कं ३) गंठित ४) थिमिअं ५) अरुहं ६) विज्जुपह ७) नमणाई ८) ति-नवई ९) समुइय ११) विण ओणय
१२. गारस १३) शिरस्य १४) आयुवुज्जोयं १५) पवतयं १६) अंजसा १७) खवे १८) तिग १९) निच्चाई २०) उरग

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) क्काकोदुंबर	१) पिंड प्रकृति	६) वस्त्र	६) अगुरु लघु
२) उच्छवास	२) आशतना	७) आनुपूर्वी	७) निश्चल
३) मौर्यपुत्र	३) वरुण	८) अवग्रह	८) काश्यप
४) अजितनाथ	४) अभक्ष्य	९) कुबेर	९) परिभोग
५) बलकूट	५) तुच्छफल	१०) जामुन	१०) सहस्त्रांककूट

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. नाम कर्म की कुल प्रकृति में बंधन कितने ?
२. श्री मंडीत ब्राह्मण ने कितने शिष्यों के साथ जैनत्व स्वीकारा ?
३. मूल में पाँचसो योजन विस्तार वाले कितने शिखर हैं ?
४. शास्त्र में गुरु की आशतनायें कितनी ?
५. शरीर बांधते हैं तब कितनी प्रकृतियां साथ में बांधते हैं ?
६. श्री मौर्यपुत्र गणर कितने वर्ष सर्वज्ञ बन कर पृथ्वी पर विचरे ?
७. कितने पर्वत पर आखरी शिखर सिद्धकूट कहलाता है ?
८. हमें कितने अभक्ष्य का त्याग करना चाहियें ?
९. अस्थिर षटक में नाम कर्म की कितने प्रकृतियाँ आती है ?
१०. श्री मंडित स्वामी की छद्मस्थ अवस्था कितने वर्ष की है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✔) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. द्वादशावर्त वंदन पदस्थ को ही किया जाता है ।
२. पर्वतों के बहुसंख्य शिखर सुवर्णमय हैं ।
३. पानी को ऐक उबाली आये याने पानी अचित्त हो जाये ।
४. स्थावर दशक की एक प्रवृति अनादेय नाम कर्म है ।
५. कच्ची इमली तुच्छोषधि का एक प्रकार है ।
६. सिद्धायतन को पश्चिम दिशा में भी द्वार होता है ।
७. सैकडो देवताओं ने अजितनाथ भगवान की स्तुति की है ।
८. मोरीय सन्निवेश गांव में बालविधवा के दूसरे विवाह का निषेध नहीं था ।
९. एक भांजे मुनिराज को हर्ष के आवेश पूर्वक गुरवंदन की भावना भाते भाते रात में ही केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई ।
१०. गुरु के आगे पैर पर पैर चढाकर बैठने से गुरु की आशातना होती है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. जीवन को सच्चे अर्थ में जीने के लिये भोग एवं उपभोग में मर्यादा आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है ।
२. महाभयंकर पापों को भोगने का स्थान वह नरक ।
३. विणओणय सिरिरई अंजलि रिसिगण संथुअं थिमिअं ।
४. प्रत्यक्षरुप से तू इस समवसरण में आकर बैठे देवों को देख रहा है ।
५. गोंद तो अचित्त है पर उसे सचित्त का स्पर्श लगा हुआ है इस कारण अभक्ष्य है ।
६. सबेरे जल्दी उठकर तैयार होकर शीतलाचार्य के पास जाकर द्रव्यवंदन किया ।
७. विराधना से अटकें तो शुभ शुद्ध भाव में रमण करते सद्‌गति का आयुष्य बांधा जाये ।
८. हम इन शाश्वत चैत्य एवं शाश्वत प्रतिमाजी को भाव से वंदन करें ।
९. जो प्रकृति कही हो उससे लेकर जितनी संज्ञा हो उतनी प्रकृतियां जानना ।
१०. मैं पाँच तिथि को अवश्य रात्रिभोजन का त्याग करुंगा ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. आयुष्य कर्म की विचित्रतायें । २) भोगोपभोग व्रत क्या है सचित्त प्रतिबद्ध अतिचार समझाओ ।
३. मंडित स्वामी की शंका और प्रभु का समाधान । ४) तीन प्रकार के गुरु वंदन ।
५. अजितशांति स्तव की गाथा २०-२१ का गाथार्थ ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com